संदेश

आज मैंने दिल्ली पुलिस के कमिश्नर का कार्यभार संभाला है और इस गौरवशाली बल का मुखिया बनकर मैं अत्यंत गौरान्वित महसूस कर रहा हूँ। यद्यपि मैं दिल्ली पुलिस बल के बाहर भी कई बार रहा हूँ फिर भी मेरी पहचान हमेशा दिल्ली पुलिस से ही होती रही है। इसलिए इस पुलिस परिवार के उतार-चढ़ाव का मेरी मनःस्थिति से सीधा संबंध रहा है।

दिल्ली पुलिस हमेशा से देश के अन्य बलों की तुलना में अग्रणीय रही है। यद्यपि इस छवि में उतार-चढ़ाव होता रहता है, फिर भी मुझे यह कहने में फक्र महसूस होता है कि ज्यादातर दिल्ली पुलिस की इज्जत और इकबाल में इजाफा ही हुआ है।

आइए आज हम सब यह शपथ लें कि अपनी कर्मठता और कर्तव्यपरायणता से दिल्ली पुलिस का परचम हमेशा ऊँचा लहरायें। दिल्ली पुलिस हम सबकी है और हम सभी एक संयुक्त परिवार के समान हैं। मुखिया होने के नाते मैं आपके सहयोग की अपेक्षा करता हूँ| लेकिन आपको यह विश्वास भी दिलाता हूँ कि आपकी हर जरूरत एवं आवश्यकता पर मैं

हमेशा आपके साथ खड़ा रहूँगा। यह मेरी नैतिक जिम्मेदारी भी है कि मैं आपके लिए हमेशा तत्परता के साथ खड़ा रहूँ ।

आप सभी प्रशिक्षित और अनुभवी लोग हैं और मुझे पूरा यकीन है कि अपने कर्तव्यों के बारे में आप सभी भली-भांति जानते हैं। अपने रोजमर्रा के कार्यों के बारे में आप सक्षम हैं और किसी वरिष्ठ अधिकारी के निर्देश का इन्तजार किये बिना स्वतः ही कर सकते हैं। मेरी आपसे अपेक्षा है कि आप अपने विवेक का इस्तेमाल करेंगे और वरिष्ठ अधिकारी स्वयं आवश्यकता के अनुसार आपका मार्गदर्शन करेंगे।

इस समय आपकी कोशिश यह रहे कि काम किस तरह से अच्छा से अच्छा रहे। इतिहास हमारे गौरवशाली अतीत का गवाह रहा है और मुझे पूरा विश्वास है कि दिल्ली पुलिस की छवि को आप सभी अपनी कर्मठता, कर्तव्यपरायणता और कार्यनिष्ठा से एक नई बुलन्दी तक ले जाएंगे। ख्याति अर्जित करना कुछ दिनों का काम नहीं है। इसे पूरी लगन से एक लम्बे अन्तराल के बाद ही अर्जित किया जा सकता है। इन प्रयासों के बावजूद भी कभी-कभी अनुकूल परिणाम नहीं आते लेकिन आपने समाज में जो सम्मान और ख्याति अर्जित की

है वह प्रतिकूल समय में भी आपको आगे बढ़ने में मदद करेगी।

आप सभी से अपेक्षा है कि आप अपने कर्तव्यों का पालन निर्भीक होकर करेंगे। अच्छी नीयत से किए गए काम को प्रतिकूल परिणाम के बावजूद भी सराहा जाएगा। आप राष्ट्रहित और विभागहित को व्यक्तिगत हित से हमेशा ऊपर रखेंगे। आपके कल्याण के लिए मैं प्रतिबद्ध हूँ।

वैसे तो आप सभी जानते हैं फिर भी इसे दोहराने में मैं कोई हर्ज महसूस नहीं करता कि सज्जनों का सम्मान करना और जरूरतमंद लोगों, जैसे वृद्ध, महिलायें, बच्चे, गरीब और दिव्यांग की मदद करना हमारा परम कर्तव्य है। समाज के सभी वर्गों के साथ संवाद रखना भी हमारा कर्तव्य है। साथ ही असामाजिक तत्वों से सख्ती से निपटना भी हमारा कर्तव्य है। हमारी सारी कार्यप्रणाली कानूनी दायरे में होनी चाहिए।

हमारी पुलिस की कार्यप्रणाली में पारम्परिक तरीकों और अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी का समावेश होना चाहिए। हमारा काम अब पारम्परिक दायरों से काफी बाहर आ चुका है। अतः अब नई सोच की जरूरत है कि अपने कर्तव्यों का निर्वहन अच्छी तरह से कर सकें।

किसी भी पुलिस बल का मुखिया अपने सहकर्मियों के सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकता। मैं आपके विचारों का सम्मान करता हूँ और चाहूँगा कि आप सभी निर्णय प्रक्रिया के हिस्सेदार बनें।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और इस तथ्य को हम सभी को मानना होगा। मैं अपना संदेश निम्न पंक्तियों से समाप्त करना चाहूँगा।

‘‘वक्त के बढ़ते कदम का साथ दें, भाग्य अपने आप बनता जाएगा।’’

जयहिन्द !

एस. एन. श्रीवास्तव,

आयुक्त पुलिस, दिल्ली